तित्थयर

जैन भवन

वर्ष : २४ अंक : ९
दिसम्बर २०००

ज्ञानी होने का सार यह है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph: 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २४ | अंक - ९, दिसम्बर | २०००

|| जैन भवन ||

संपादन

लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - **Editor : Tithayar,** P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें -
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three year : Rs. 160.00, US $ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007 Phone: 238 2655 and Printed by her
at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Calcutta-700 006 Phone: 241 1006

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख		लेखक	पृ. सं
१.	प्रजातन्त्र - महावीर	-	श्रीमती लता बोथरा	३८७
२.	कर्म की कहानी	-	पन्यास प्रवर श्री सुयश मुनिजी	३९३
३.	"बुज्झं! बुज्झं किं न बुज्झह"	-	श्रीमती गायत्री कल्याण कांकरिया	४००
४.	मलयासुन्दरी चरित्र	-		४०८

आवरण चित्र–**श्री अष्टापद (कैलाश)**

Composed by :

Anupriya Printers, 6A, Baroda Thakur Lane, Calcutta-700 007, Ph. 232 6083

प्रजातन्त्र - महावीर

पूर्वानुवृत्ति

प्लेटो के शिष्य अरस्तु का नाम राजनीति शास्त्र में उल्लेखनीय है। अपनी कृति **Politics** में उसने राज्य सम्बन्धी सिद्धान्तो का वर्णन किया है। अरस्तु राज्य की उत्पत्ति प्राकृतिक मानता है अर्थात राज्य प्रकृत जन्य है - **The state is a creation of nature and man is political Animal.** अपनी आवश्यकताओं के लिये व्यक्ति को परिवार, ग्राम आदि संस्थाओं या समुदायों की आवश्यकता होती है। अतः राज्य भी व्यक्ति के लिये नितान्त आवश्यक समुदाय है। राज्य परिवार और ग्रामों का एक ऐसा समुदाय है जिसका उद्देश्य पूर्ण और आत्म निर्भर जीवन की प्राप्ति है। **The state is the union of families and villages in a perfect and self sufficing life by which we mean a happy and honourable life - Arislotle.** अरस्तु के अनुसार जिस प्रकार मानव शरीर में अनेक अंग होते है तथा अलग-अलग कार्य करते है और इन्हें करने के लिये शरीर पर निर्भर रहते है, यदि कोई अंग ठीक उसी प्रकार काम नहीं करता तो शरीर कमजोर पड़ता है ठीक इसी प्रकार राज्य भी अनेक अंगों व्यक्ति, उसकी सस्थाएँ, ग्राम, परिवार आदि से मिल कर बना है।

The state is a supreme Association - राज्य एक सर्वोच्च समुदाय है तथा उसका आस्तित्व व्यक्ति के जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिये है। अरस्तु ने विभिन्न शासन प्रणालियों जिनमें राजतन्त्र, निरंकुशतन्त्र, कुलीनतन्त्र, धनिक वर्ग तन्त्र, सर्वप्रजातन्त्र तथा प्रजातन्त्र (भीड़ तन्त्र) का विस्तृत वर्णन किया है। राजतन्त्र और कुलीन तन्त्र की अप्राप्तया को देखते हुए उसने सर्व प्रजातन्त्र प्रणाली को सर्वश्रेष्ठ माना है। अरस्तु के अनुसार श्रेष्ठ प्रजातन्त्र वह है जिसमें कानून का शासन हो, करिश्माती नेताओं का अभाव हो और योग्य नागरिकों को विधि संगत ढ़ंग से शासन संचालन का अवसर प्राप्त होता हो।

अरस्तु के बाद जितने भी विद्वान हुये उनके विचारों का स्रोत अरस्तु का दर्शन रहा था इसीलिये अरस्तु को **'Father of Modern Political thought'** कहा जाता है। एथेन्स में प्रजातन्त्र का सर्वाधिक विकास हुआ। एथेन्स के प्रजातन्त्र का जन्म दाता सोलन **(Solon)** था। जिसने ५८४ ई. पू. के लगभग कुलीनों की शक्ति पर **Athens** के लिये एक विधान बनाया जिसमें कुलीनों की शक्ति पर नियंत्रण लगाया तथा जनता को कुछ अधिकार दिये गये। इस प्रकार प्रजातन्त्रात्मक व्यवस्था का प्रारम्भ हुआ। एथेन्स निवासियो ने पिसिस्ट्रेट्स के बाद उसके पुत्र को पदच्युतकर ५०८ ई. पू. में पूर्ण प्रजातन्त्र स्थापित किया जिसका आधार क्लेस्थनीज का विधान था। इस प्रजातन्त्र की चरम उन्नत अवस्था में एथेन्सवासियों ने फारस के दारा महान् को ४९० ई. पू. में मैराथन के युद्ध में हरा कर ऐतिहासिक विजय प्राप्त की थी। इस विजय के बाद ५० वर्ष तक एथेन्स की उत्तरोत्तर प्रगति होती रही तथा एथेन्स ग्रीस के बौद्धिक एवं कलात्मक जीवन का केन्द्र और क्रियात्मक प्रजातन्त्र का आदर्श बन गया। इस समय एथेन्स की बागडोर पेरिक्लीज नामक सुयोग्य राजनैतिज्ञ के हाथ में थी। पेरिक्लीज के बाद धीरे-धीरे गणतन्त्र कमजोर पड़ने लगा तथा अन्त में मेसिडोनिया के शासक फिलिप तथा उसके पुत्र सिकन्दर ने सारे ग्रीस पर अपना अधिकार कर एक छत्र शासन स्थापित किया। पेरिक्लीज के समय व उससे पूर्व अनेक विचारधाराओं का युनान में विकास हुआ।

रोम का गणतन्त्र – रोम की स्थापना से ५७० ई. पू. तक रोम में निर्वाचित राजतन्त्र था। राजा की सहायता के लिये उसके द्वारा चुने हुये ३००० सदस्यों की एक सीनेट थी जो राजा को निर्वाचित करती थी। कोमटिया क्यूरियटा नाम की एक महासभा का विवरण भी मिलता है। अन्तिम राजा टाक्विनियस सुपबर्स के निष्कासन के साथ ही राजतन्त्रात्मक युग की समाप्ति हो गयी और गणतन्त्रात्मक युग का प्रारम्भ हुआ। राजा के स्थान पर दो कांसिल नियुक्त किये गये जो एक वर्ष के लिये कोमेटिया सेन्चुरियटा द्वारा निर्विचित किये जाते थे। इनका चुनाव उच्च व कुलीन वर्गीय पैट्रीशियनों में से ही होता था। इन दोनों कांसिलरो के समान अधिकार थे एवं एक दूसरे पर प्रतिबन्ध रखते थे। इन कांसिलो के

अत्याचारों से जनता की रक्षा के लिये ट्रिब्युनो का उल्लेख मिलता है जो शासन व्यवस्था के निरीक्षण का कार्य करती थी। इस काल की महत्वपूर्ण उपलब्धि ४५०-४५१ ई. पू. का एक कानूनी संग्रह था जिसे 'बारह अभिलेख' **Twelve tables** के नाम से पुकारा जाता था। ई. पू. १०६ में रोम के प्रसिद्ध विद्वान सिसरो ने रोम में स्थापित साम्राज्यवाद के स्थान पर गणतन्त्रीय व्यवस्था को पुनः स्थापित करने का प्रयत्न किया। सिसरो राज्य को एक संगठित निकाय मानता था जो कानून व अधिकारों की मान्यता तथा एक दूसरे के हित के लिये एक सार्वजनिक समझौते द्वारा बंधे होते हैं। अतः राज्य जनता की सम्पत्ति है, जनता की संगठित शक्ति है तथा मानवीय इच्छा की अभिव्यक्ति है। आज के लोकतन्त्र का मूल सिद्धान्त कि राज्य की सत्ता लोगों में है किसी एक व्यक्ति या समूह में नही सिसरो के दर्शन में समाहित है। वह राज्य की उत्पत्ति समझौते की जगह सहमति और विधि के सिद्धान्तों द्वारा मानता था।

युनानी विचारक पोलिबियस (२०४ई. पू.) राज्य की उत्पत्ति के शक्ति सिद्धान्त का समर्थक था। उसके द्वारा प्रतिपादित सरकार के तीनों अंगों में 'शक्ति संतुलन के सिद्धान्त' का मध्ययुग में मार्सिलियो, एक्वीनस तथा आधुनिक विचारक लॉंक एवं मांटेस्क्यू पर काफी प्रभाव पड़ा था। अमेरिका की शासन व्यवस्था पर पोलिबियस के शक्तिपृथक्की करण के सिद्धान्त का स्पष्ट प्रभाव दिखायी देता है। इस सन्दर्भ में इतिहासकार **W. Ebenstein** का कहना है कि - **'In the history of the united states in particular, Polybius played and importent intellectual role in drafting of the constitution.'**

मध्य युग में एक सार्वभौम ईसाई विश्व राज्य का सिद्धान्त विकसित हुआ था जिसके अनुसार जीवन सिद्धान्त एक था लेकिन उसकी व्यवस्था के लिये ईश्वर ने दो अधिकारियों को बनाया है एक आध्यात्मिक जीवन के नियमन के लिये कैथोलिक चर्च तथा दूसरा सांसारिक जीवन के लिये एक विश्व राज्य। मध्य युगीन योरूप का राजनैतिक इतिहास सत्ता के अधिकार व संघर्ष का इतिहास है जहाँ इन दोनों अधिकारियों के बीच अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिये बराबर संघर्ष होते रहे। यह दो सत्ताओं या दो तलवारो का सिद्धान्त था जिसमें दोहरे अनुशासन तथा दोहरे नियमों की स्थापना हुई थी।

सर टामस एक्वीनस को मध्य काल का सबसे महान दार्शनिक तथा राजनैतिक चिन्तक माना जाता है। राजनैतिक विचारक फास्टर के अनुसार वे समूचे मध्ययुगीन चिन्तन का प्रतिनिधित्व करते है। अरस्तु के ग्रन्थो पर उन्होंने टीकाएं लिखी थी। उन्होंने यूनान की बुद्धिवादी विचारधारा से ईश्वरीय ज्ञान पर बल देने वाली ईसाई विचारधारा का समन्वय किया। यह भी कहा जा सकता है कि उन्होंने विवेक तथा श्रद्धा और विश्वास में समन्वय बैठाने का कार्य किया। वे राज्य की उत्पत्ति का कारण मनुष्य के पापों को मानते है। जो राज्य समष्टि के हित को लक्ष्य मानते है वे उत्तम हैं। वह राजतन्त्र को श्रेष्ठ तथा राजा के दैवी अधिकारों के पक्षपाती थे।

८०० ई. में रोम में पोप तृतीय ने शार्लिमेन को रोम के सम्राट पद पर आसीन कर पवित्र रोमन साम्राज्य की स्थापना की थी। **Saline** ने इस सन्दर्भ में कहा है कि ईसाई चर्च की एक ऐसी संस्था के रूप में, जिसे मनुष्य के आत्मिक विषयों से ऊपर राज्य से स्वतन्त्र रह कर शासन करने का अधिकार हो, अभ्यूदय होना पाश्चात्य योरूप के इतिहास में एक सर्वाधिक क्रान्तिकारी घटना थी। लेकिन धीरे-धीरे अराजकता के साथ-साथ सामन्ती प्रभाव भी बढ़ने लगा। राज्य और चर्च के समानाधिकार होने से दोनों में संघर्ष बढ़ता गया। ११वीं से १४वीं शताब्दी तक का युग योरूप में धर्म सत्ता और राजसत्ता के बीच संघर्ष का युग था। उसके बाद राज्य शक्तिशाली होने लगे तथा शासन कार्यों में पोप का हस्तक्षेप नगण्य होने लगा। अरब आक्रमण से प्राचीन लेखकों और विचारको के प्रभाव का विस्तार हुआ। अरब विद्वानो ने अपने सिद्धान्तों का अनुवाद कर योरूप में इसका प्रचार किया। १४५३ ई. में तुर्की द्वारा **Constantipole** पर अधिकार होने से वहाँ के विद्वान अपने बहुमूल्य ग्रन्थों को पश्चिमी योरूप में लेकर चले गये एवं यहाँ उनका प्रचार तार्किक तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से करने के कारण वहाँ के लोगों में एक नयी चेतना आयी। लोगों के सोचने के ढंग में परिवर्तन आया। इस प्रकार बौद्धिक युग का प्रारम्भ हुआ जिसके साथ-साथ प्राचीन लोकतन्त्रात्मक परम्परा को पुनः जीवित करने का प्रयास भी शुरू हुआ। ये पुनः जागरण का काल था। इस पुनः जागरण के कारण

पोप तन्त्र के पतन के साथ-साथ व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और लोकतन्त्र की भावना का सूत्रपात हुआ। धर्म सुधार आन्दोलन के प्रमुख नेता कार्ल्विन ने कहा कि राजा के धर्म विरुद्ध अनुचित आदेशों का पालन करने के लिये जनता बाध्य नहीं है। नाक्स, हार्टमैन आदि विचारको के अनुसार राजा को शक्ति जनता द्वारा प्राप्त होती है। इतिहास कार गैटेल ने अपने विश्लेषण में लिखा है –'यद्यपि धार्मिक सुधारो का तत्कालीन परिणाम यह हुआ कि राज्य की सत्ता को बल मिला, किन्तु अन्त में उसने व्यक्तिगत स्वतन्त्रता तथा लोकतन्त्र का पोषण और संवर्धन किया।' **'While the immediate effect of the reformation was to strengthen the authority of the state, the Ultimate effect was to further individual liberty and democracy.'**

१६वीं शताब्दी के प्रमुख राजनैतिक विचारक मैकियावेली **Machiavelli** का चिन्तन मध्ययुगीन परम्परा से हट कर था। गैटेल के अनुसार **He was the first modern thinker to concievs of a sovereign state,** वह प्रथम आधुनिक यथार्थवादी था जिसने बताया कि राज्य को स्वयं के लिये जीवित रहना चाहिये और उसको अपने संरक्षक तथा हित संवर्द्धन का उद्देश्य रखना चाहिये। मैकियावली के अनुसार मनुष्य विभिन्न कमजोरियों से ग्रस्त है तथा राज्य की आवश्यकता मनुष्यों की सुरक्षा की मांग है। वह आदर्श शासन व्यवस्था गणतन्त्र को ही मानता है।

बोदां ने जहां राज्य को अनेक परिवारों और उनकी सामान्य सम्पत्ति को विधि संगत सरकार माना है जिस पर सर्वोच्च शक्ति और विवेक का शासन होता है। **A state is a lawful Govt. of mony families, and of their Common possession ruled by a sovereign power and by reason. -- Bodin (Six livers D -- La Republica.)**

वहीं पर वह प्रभुसत्ता को राज्यकी सर्वोच्च शक्तिमानता है। वह राजा को प्रजा की निजी सम्पत्ति छीनने का अधिकार नहीं देता है लेकिन १६वीं सदी का प्रसिद्ध विचारक हांब्स राजा को सम्पूर्ण अधिकार देता है। हॉब्स के विचारों में उसके समय की तत्कालीन परिस्थितियों का प्रभाव था। १६३९ में **England** में गृहयुद्ध के बाद गणतन्त्र (अलिवर क्रामवेल) की असफलता तथा **Restoration** द्वारा पुनः राजतन्त्र की स्थापना ने

हॉब्स की विचार धारा को प्रभावित किया था तथा वो कट्टर राजतन्त्र का समर्थक बन गया था। उसका सामाजिक समझौते द्वारा राज्य की उत्पत्ति का सिद्धान्त काफी महत्वपूर्ण माना गया है। हॉब्स के अनुसार राज्य की उत्पत्ति के पूर्व प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य स्वार्थी, अहंवादी संघर्षमय था। 'जिसकी लाठी उसकी भैस' का सिद्धान्त लागू था। हमेशा भय, अशुभ की भावना बनी रहती थी। नैतिकता का अभाव था। ऐसी स्थिति से त्रस्त होकर मनुष्यों ने इरारो मुक्ति का उपाय सोचा और आपस में एक समझौता **(Contract)** किया जिसमें सबने अपने अधिकारों का त्याग इस शर्त पर किया कि दूसरा भी अपने अधिकारों का त्याग करेगा। जो हॉब्स के शब्दों में इस प्रकार था। **"I authorised and give up my right of governing myself to this man or to this assembly of men, on this condition, that thou give up thy right to him and authorise all his actions in like manner (Hobbes-Laviathan 1657).**

ऐसा करने पर सारा समुदाय संयुक्त हो जाता है तथा इस समझौते के बाद जिस व्यक्ति को वे अपने अधिकार सौपते हैं वह जनता की शान्ति और प्रतिरक्षा के लिये पृथ्वी में मानव देव की तरह है। इस प्रकार हॉब्स का समझौता अनेक इच्छाओं के स्थान पर एक इच्छा का निर्माण करता है जिसको असीम अधिकार प्राप्त होते हैं। हॉब्स से ठीक विपरीत जान लांक की विचार प्रणाली में प्रत्येक तत्व व्यक्ति के चारों ओर घूमता है और उसका लक्ष्य व्यक्ति की सम्प्रभुता को सुरक्षित करना था।

क्रमशः

कर्म की कहानी

श्री सुयश मुनि जी

पर दुर्भाग्य से बच्चे ने पढ़ लिख कर एक सहपाठी छात्रा से प्रेम विवाह कर लिया और माता-पिता को पत्र लिखा– मैंने सुखी जीवन जीने के लिये प्रेम विवाह किया है, अब आप लोगों के साथ मिलकर गांव में रहना संभव नहीं है। उपकार के लिये धन्यवाद। माता-पिता इस समाचार को पढ़कर कर्तव्य विमूढ़ हो गये। इस असहाय घटना को सहन नहीं कर पायें। जहर खाकर आत्म हत्या कर लिये।

(४) एक सुखी दम्पति। संसार में कोई कमी नहीं, अपार धन, दौलत, पति-पत्नी में स्नेह भाव। पर दुःख, था कि संतान नहीं। बहुत उपचार कराये, डाक्टर, वैद्य, तान्त्रिक, मान्त्रिक सभी को दिखाया, बहुत तीर्थ दर्शन पूजन किये। जिसने जो कहा सभी विधि पूर्वक किये पर गोद नहीं भरी संसार सूना और नीरस बनता गया। सुख के सागर में यह एक दुःख की चिनगारी।

(५) एक भव्य हवेली। अधिक मुनाफा लेकर बेच दिया गया। दो दिन बाद उस मकान में आग लग गयी सभी जलकर खाक हो गया एक हंसता है तो दूसरा रोता है।

इन प्रसंगों को देखते हुये प्रश्न होता है कि ऐसा क्यों हुआ? किसने किया? और किया तो किन कारणों से किया?

क्या इसके पीछे कोई महती अदृश्य शक्ति कार्य कर रही है। कैसे एक श्रमिक हिटलर जर्मनी का कर्णधार बनता है।

इस प्रकार की अनेकानेक घटनायें हमारे सामने रोज घट रही हैं, जो हमारी समझ से परे है। सामान्य स्थितियों में इसका कारण पाना असंभव है। आइये इसको समझने का प्रयत्न करें।

इस चित्र विचित्र संसार का निर्माण किसने किया? अगर हम उत्तर दे कि ईश्वर ने किया तो अनर्थ होगा क्यों कि ईश्वर इस प्रकार दुःखभरा संसार का निर्माण नहीं कर सकता है। अगर हम कहे कि सभी जीवों का दुष्कर्म पाप का फल ईश्वर देते है तो भी अनुमान गलत होगा

क्यों कि वे परमात्मा तो सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है। फिर उन जीवों को पाप ही क्यों करने देते है। अगर परमात्मा करुणामय है तो संसार के जीवों से पाप करवा कर उन पाप कर्मों का फल भोगने के लिये नरक में क्यों भेजते है।

नहीं——! ईश्वर कोई साधारण सामान्य व्यक्ति नहीं है नाहीं निर्दयी और शक्तिहीन या क्षूद्र मनोवृत्ति वाले हैं। ईश्वर तो सर्वशक्ति मान और करुणा के सागर है। वे कभी किसी को दुःख नहीं दे सकते है। कुछ लोगों की धारणा है कि भगवान लीला करने के लिये इसं संसार को बनाये है। यह बात भी उचित प्रतीत नहीं होती है, क्यों कि परम सम्पन्न ज्ञानमय परमात्मा कभी लीला नहीं करते है। ये लीला खेल अपूर्ण व्यक्ति ही करते है। इस संसार की विचित्रता का मुख्य कारण आत्मा द्वारा कृत स्वकर्म हैं। सर्व प्रथम इस संसार की विचित्रता का कारण कर्म है जिसको समझने का प्रयत्न करते है।

अणु जगत — विश्व ब्रह्माण्ड में सदा दो तत्वों की विद्यमानता पाई जाती है।

(१) जड़ (२) चेतन (जीव)

चेतन शक्ति युक्त द्रव्य को जीव कहते है।

शरीर में जब तक जीव होता है तब तक हम चलना-फिरना, खाना-पीना आदि अन्य कोई भी क्रिया कर सकते है। शरीर जब जीव रहित हो जाता है तब शरीर निष्क्रिय हो जाता है। शरीर से जीव के निकलने की क्रिया को मृत्यु कहते है। व्यक्ति चाहे कितना समर्थ क्यों न हो वह मृत्यु को रोकने में असमर्थ हे। वह चाहे संसार की सर्वोत्कृष्ट सत्ता और सम्पत्ति को भोगता हो पर मृत्यु के बाद सभी व्यर्थ है।

जीव के विपरीत गुणधर्म युक्त वस्तु को जड़ कहते है। जीव रहित शरीर, मकान, कपड़ा, पेन, सोना, रत्न आदि को जड़ (अचेतन, अजीव, पुद्‌गल) कहते है।

जगत में जीवों की संख्या अनन्त है। सृष्टि की दृष्टि से जड़ भी अनन्त है। जड़ के मुख्य दो भेद।

(१) विनाशी (२) अविनाशी

जो बारम्बार नयारूप धारण करता है, और फिर समाप्त हो जाता है अर्थात् सर्जन विसर्जन की प्रक्रिया जिसमें होती रहती है, उसे विनाशी जड़ पदार्थ कहते है। दृश्यमान सभी पदार्थ विनाशी जड़ है।

जो कभी नष्ट नहीं होता है तथा सामान्य दृष्टि चर्मचक्षु से जो दृश्यमान नहीं है, उसे अविनाशी जड़ कहते है।

एक विशालकाय पत्थर का असंख्य खंड किया जाय फिर उसका एक छोटा टुकड़ा लेकर यांत्रिक सहायता से उसको इतना छोटा अंश बनाया जाय कि अब उसका और विभाजन करना संभव न हो, आज के भौतिक वैज्ञानिक उसे परमाणु कहते है।

जैन दर्शन परमाणु के विषय में और भी आगे बढ़कर कहते हैं, जिसे देख सकते हैं, जिसमें शस्त्र प्रयोग हो सकता है उसका और भी विभाजन किया जा सकता है। वैज्ञानिको ने संशोधन करके प्रथम परमाणु (एटम) फिर इलेक्ट्रोन, प्रोटोन और हाल में प्रोजीटोन का शोध किया है। जैन दर्शन दृष्टि से ये सब अन्तिम परमाणु नहीं है। परम शक्तिशाली, परमज्ञानी क़ी दृष्टि में जो अविभाजित है, उसे ही परमाणु कहत्ते है। उस परमाणु को संसार की कोई भी शक्ति नष्ट करत्ते में असमर्थ है, इसलिये उससे अविनाशी जड़ कहते हैं।

ऐसे अनन्त अविनाशी परमाणु से इस जगत का निर्माण हुआ है। कर्म भी उन परमाणु का ही एक प्रकार है।

उदाहरण के लिये एक मकान लें। एक मकान में हजारों ईंट लगती हैं एक-एक ईंट में असंख्य कण है, कण-कण में अणु और अणु-अणु में असंख्य परमाणु रहते है।

अर्थात् सम्पूर्ण विश्व में मूलरूप से परमाणु का ही अधिपत्य है। परमाणु की असंख्यता का एकत्री करण ही कार्य रूप में हमें दृश्यमान होता है।

दो परमाणु को द्वयणुक, तीन परमाणु को ज्यणुक और इसी प्रकार बढ़ते-बढ़ते अनन्तानन्त स्कन्ध बनते हैं। इसमें से कुछ जो कार्य में नहीं लिये जाते उन्हें अग्रहण वर्गणा कहते है। इन्हें प्रथम वर्गणा के रूप.में रखा गया है। क्रमिक बढ़ते-बढ़ते १६वीं वगर्णा कर्मण-वर्गणा है। यह १६वीं वर्गणा जब हमारे जीव के साथ मिलती है, तब उसे कर्म कहते है।

जीव, जगत और कर्म-- जिसमें चैतन्य शक्ति है, उसे आत्मा कहते है। आत्मा का मूल स्वरूप परमशुद्ध है। इस पर कोई दूषण नहीं है। परन्तु जब आत्मा पर कर्मण वर्गणा मिल जाता है, तब वह शुद्ध आत्मा विकृत और अशुद्ध हो जाता है, उसे तब संसार में व्यवहार रूप में **जीव** कहते है। इस प्रकार कर्म युक्त आत्मा को जीव संसारी कहा जाता है। जो जीवात्मा साधना के द्वारा राग-द्वेष से मुक्त हो जाती है। वह आत्मा पुनः स्वस्वरूप को प्राप्त कर लेती है। उस आत्मा में पुनः १६वीं कर्मण वर्गणा स्पर्श नहीं करता है। जैसे– लोह चुम्बक चुम्बकीय शक्ति से लोह चूर्ण को आकर्षण करता है पर वह लोहा चुम्बकीय शक्ति नष्ट होने पर लोह चूर्ण को आकर्षण करने में असमर्थ होता है। इसी प्रकार आत्मा (जीव) में राग-द्वेष रूपी कर्म को आकर्षण करने वाली चुम्बकीय शक्ति नष्ट होते ही वह कर्मण वर्गणा को ग्रहण नही करती है।

कर्मण वर्गणा की चुम्बकीय शक्ति को नष्ट करने वाले जीव को परमात्मा, भगवान, वीतराग कहते है।

प्रत्येक जीवात्मा मन, वचन काया से हर समय कुछ न कुछ क्रिया करती रहती है। जीवात्मा के अन्दर राग-द्वेष की परिणति के साथ प्रत्येक समय मन, वचन, काया की शुभा शुभ प्रवृति (परिणति+ प्रवृति=कर्मबन्ध) मिलकर कर्मण वर्गणा को आकर्षण करती रहती है।

जीवात्मा के मूल में रहा हुआ अनन्त ज्ञान का प्रकाश, अनन्त दर्शन की शक्ति, अनन्त चारित्र का पराक्रम अपूर्व सुखानुभूति, अगुरुलघुत्व, आदि महागुण कर्मण वर्गणा से मन्द पड़ जाते हैं।

मन, वचन, काया की विविध प्रवृति से कर्मण वर्गणा का समूह जीवात्मा की ओर आकर्षित होता है। ये कर्मण वर्गणा जब तक आकाश में होता है तब तक कर्मण वर्गणा कहलाता है जीवात्मा के साथ सम्बन्ध होते ही वे सब कर्म कहलाता है।

कर्म ही जीवात्मा को सुखी-दुःखी, धनी, गरीब, रोगी-निरोगी, कामी-क्रोधी, योगी-भोगी, हिंसक-अहिंसक की ओर आकर्षित कहता है। फिर उसी कर्मों के फलो के अनुरूप जीवात्मा संसार में भ्रमण करता रहता है।

प्रश्न– कर्मण वर्गणा जीव सर्व प्रथम जब लगा, उससे पूर्व जीवात्मा कहां थी?

उत्तर– जीवात्मा, जगत और कर्म-संयोग ये तीनों अनादि अनन्त हैं। अर्थात इसके प्रारंभ का प्रश्न ही नहीं आता है। व्यवहारिक दृश्यमान संसार में जीवात्मा का प्रारंभ काल देखा जा सकता है। जीवात्मा के आदि प्रारंभ के विषय में कुछ बाते—

(१) जो जीवात्मा को एक कार्य की परिणति (जन्म) रूप में स्वीकार करते है तो उसके लिये एक कर्ता को स्वीकार करें तो, ईश्वर का भी कोई न कोई कर्ता स्वीकार करना होगा। इस प्रकार कर्ता की परम्परा चलती जायेगी। अन्त में किसी भी एक को स्थायी-स्वीकार करना ही पड़ेगा।

(२) जो जीवात्मा को उत्पन्न होना स्वीकार करे तो, उत्पत्ति समय में शुद्ध मानना होगा। शुद्धात्मा अगर जन्म, मरण, सुख, दुःख का अनुभव करे तो साधना त्याग व्यर्थ हो जायेगा। क्यों कि फिर तो साधना द्वारा प्राप्त शुद्धात्मा भी पुनः संसार में आ जायेगा। फिर मुक्ति की कल्पना ही नहीं कर सकते है।

(३) अगर हम स्वीकार करें कि आत्मा का जन्म राग-द्वेष युक्त होता है, तो फिर यह भी बाध्य होकर मानना होगा कि राग-द्वेष आगे से साथ ही आया है। जन्म की परम्परा-जन्मान्तर की कड़ियाँ जुड़ जायेगी। अन्तिम कर्म को प्रधान मानना ही होगा।

इससे जीव, जगत और कर्म नित्य सिद्ध होता है। हाँ इसमें हरक्षण पर्याय का परिवर्तन होता रहता है इसलिये सम्पूर्ण संसार हमें परिवर्तनशील दिखता है।

राग-द्वेष का भाव और मन वचन काया की प्रवृत्ति कर्मबन्ध का मुख्य कारण है।

कर्म बन्ध के चार कारण— सम्पूर्ण विश्व ब्रह्माण्ड के दृष्टा परमज्ञानी वितराग देव जो स्वयं साधना के माध्यम से सभी कर्मों से मुक्त हो गये। उन्होंने जीवात्मा और परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को आच्छादित करने वाला कार्मिक अणु किस प्रकार किन कारणों से जीवात्मा के साथ लगता है उनके चार मुख्य कारण बताये हैं।

(१) **मिथ्यात्व**– स्वार्थ या भोग लालसा के कारण सत्य के प्रति उपेक्षा।

(२) **अविरति**– भौतिक सुख भोग की कामना से सत्य आचरण के प्रति दुर्लक्ष्य।

*(३) **कषाय**– स्वयं की धारणा के अनुरूप भौतिकता की अनुपलब्धि* में अकारण चेष्टा।

(४) **योग**– भौतिकता की उपलब्धि के लिये मन, वचन, काया, की प्रवृत्ति।

आप जानते है कि इस संसार में अनादि काल से सत्य और असत्य का युद्ध चला आ रहा है। यह अनादि है। इन दोनों का स्वरूप बढ़ता-घटता रहता है। कभी सत्य का साम्राज्य चलता है तो कभी असत्य का प्रभाव अधिक पाया जाता है। इसी प्रकार इसी के आधार पर जीवात्मा का भी प्रभाव कम-ज्यादा होता रहता है।

हम जब सत्य और असत्य की भेद रेखा नष्ट कर देंगे हमारे पास रहेगा मात्र मूल स्वरूप, अनन्त प्रकाश इसे मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण कहते है।

पर हमारा दुर्भाग्य है कि हम असत्य को सत्य मानकर इसी में मुक्ति पाने का असफल प्रयास कर रहे है। हमें सबसे पहले एक बात स्वीकार करनी होगी कि सात्विक सुखरूपी झरने का उद्‌गम स्थान सत्य के पक्ष में है।

जीवन में एक ऐसा समय भी आता है जो हृदय की स्थिति को बदलता है। अन्तर्गत में सत्य की लहर होती है तभी सद्‌गुरु से मिलन होता है और शांति से सद्‌गुरू की उपदेश वाणी सुनते है। उपदेश वाणी सुनते-सुनते सत्य असत्य की भेद रेखा स्पष्ट होती जाती है। अर्न्तजगत में एक क्रान्ति होती है। क्रान्ति के परिणाम स्वरूप अन्तर्चक्षु का उदय होता है। सत्य स्वयं सिद्ध होता चला जाता है। हृदय परिवर्तन के बिना जीवन परिवर्तन असंभव है।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि हृदय तो परिवर्तन हो जाता है पर कुछ, संयोग, संस्कार के कारण जीवन का परिवर्तन नहीं होता है। उस स्थिति में जीवात्मा की दयनीय स्थिति होती है।

उदाहरण के रूप में समझे——एक व्यक्ति आजीवन तम्बाकू का सेवन करता आया है। जीवन की अन्तिम स्थिति में शरीर रोग ग्रस्त होता है। डाक्टर कैन्सर की आशंका करते है। तम्बाकू छोड़ने को रोगी को निर्देश देते है। पर अब असम्भव है—क्योंकि तम्बाकू जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। इसके बिना अब शरीर में अन्य अनेक बीमारियाँ आने लगती है। जैसे-मल शुद्धि न होना, भूख न लगना, बेचैनी होगी। फिर वह दूरस्थ कैन्सर को भूलकर उपस्थित दुःख मिटाने के लिये कैन्सर का कारण बनी तम्बाकू का सेवन करता है।

फिर भी उससे एक लाभ तो होता है कि पाप आगमन के अनेक कारण बन्द कर देता है। जीवन में मुक्तता की अनुभूति होती है। संसार के अतल में डूबती जीवन नैया को बचा लेता है। प्रवाह से धीरे-धीरे किनारे की ओर आने लगता है। जीवन परिवर्तन होने लगता है। कभी अधिक गहरे संस्कार के कारण इस जीवन में पूर्ण परिवर्तन न भी ला सके तो दूसरे जन्म में अवश्य कार्यरूप होता है। याद रखे ये संसार के भौतिक पदार्थ अगले जीवन में साथ जाये या ना जाये संस्कार तो अवश्य साथ जाते है। फिर ये संस्कार सत्य हों या असत्य।

हृदय और जीवन के बीच इस प्रकार की विसम्वदिता बहुत समय तक स्थिर नहीं रहती है। कभी इधर तो कभी उधर परिवर्तन होता रहता है। इस प्रकार की बारम्बार परिवर्तन की क्रिया जीवन को सत्य के पास लाकर खड़ा कर देती है। क्यों कि हृदय का परिवर्तन आत्मा को जाग्रत करने लगता है।

जाग्रत आत्मा की मनोवेदना– मैं इस जगत में आया तब विशुद्ध था। संसार के कोई कार्य से परिचित नहीं था। पाप-पुण्य का तो कोई ज्ञान ही नहीं था। जीवन के बचपन में ७/८ वर्ष तक मैं निर्दोष आनन्द का भोग करता रहा उस समय जीवन में ना कोई भूत काल था, ना कोई भविष्य काल, मात्र वर्तमान में आनन्द लूटता रहा। मुझे जो भी प्यार देता चुम्बन जैसा उसके पास आकर्षित होकर पहुंच जाता था।

क्रमशः

"बुज्झं! बुज्झं किं न बुज्झह"

श्रीमती गायत्री कल्याण कांकरिया

हे भव्य प्राणियों बोध पाओ, बोध पाने का तात्पर्य है कि आत्म-जागरण से सफल बनो। धर्म की साधना वैयक्तिक पर उसका परिणाम सामाजिक भी होता है, तभी वीतराग महावीर आज भी जीवन्त है। महावीर जो केवल ज्ञान, केवल दर्शन से सम्पन्न बने, आध्यात्मिक उपलब्धि से उन्होंनें जो समग्र ज्ञान उपलब्ध किया उसे ही उन्होंने भव्य प्राणियों के लिये उपस्थित किया। परमात्मा की अनुकंपा वा क्षमाशील प्रवृति ही मनुष्य को अपना अस्तित्व सृष्टि में बनाये रखने में सहायक है, **"माणुसुत्तं सुई सद्धा"** जब तक मानव में मानवता नहीं आयेगी तो यथार्थ में शास्त्र-श्रवण भी नहीं होता——सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, महावीर की वाणी से जो व्यक्ति अपने जीवन में मानवता और समता लाने का प्रयत्न करके जीवन का सही मूल्यांकन कर पायेंगे, तभी उनका जीवन सार्थक होगा, जो व्यक्ति अपने मानवीय धरातल को सुशोभित करता है वही सबको नत-मस्तक करा सकता है, होश और जोश बरकरार रहने से गति से प्रगति (उन्नति) सधती है——

अनंत उपकारी तीर्थंकर महावीर ने दृढ़ संकल्प के साथ आत्म-साधना की, अपने संकल्पानुसार गृहस्थाश्रम में भी रहे, और जब घोर जंगल या अनजाने क्षेत्र में विचरे तो घोर परिषह सहे, दैविक उपसर्ग सहे परन्तु अपनी देह की परवाह नहीं की वरन् आत्मबली बन, स्वयं की लौ से स्वयं को तपाकर परिपूर्ण ज्ञान, पूर्ण शक्ति को प्राप्त किया, तब कहीं दुनिया को आध्यात्मिक उपदेश दिया यानि **पहले बनो फिर बनाओ** को पूर्णतः चरितार्थ किया। उनके समवसरण में सभी जीव भेद-भाव शत्रुता को विस्मृत कर एकाग्र-भाव से उपस्थित रहे। प्राणी मात्र के संरक्षक, करूणा सिन्धु महावीर ने किसी भी आत्म शोधक साधक को **देवानुप्रिय** से सम्बोधित किया और यही कहा **जैसा सुख उपजे वैसा करो** किसी की भी स्वतन्त्रता का हनन नहीं किया वरन् चित्त की चंचलता के विश्लेषण

हेतु **क्षण भर भी प्रमाद न करो** का शंखनाद किया। उन्होंने **आप तुले पयासु** व **सब्वेसिं जीवियं पियं** के आलोक में अहिंसा, अनेकान्त और अपरिग्रह का उद्घोष किया। सर्व पूज्य महावीर त्रिभुवन के स्वामी बने, पर नियन्ता नहीं। उन्होंने किसी नये धर्म की स्थापना नहीं की बल्कि पूर्व तीर्थंकरों के ही सिद्धान्तों का देश, काल, समयानुसार प्रतिपादन किया, अपने सम्यक् ज्ञान दर्शन और चारित्र से, (उनका यही दर्शन जिन वाणी है) जो भव्य प्राणी आत्म यज्ञ से निखर कर बन्धक मुक्त होने का सही पुरुषार्थ करेगा वही श्रमण या निर्ग्रन्थ बनने का अधिकारी हो जायेगा। पर आज परिस्थिति कुछ और है, विचारों में महावीर का स्थान है परन्तु आचार विविध कर्मकाण्ड, अनुष्ठान, आडम्बर प्रदर्शन और मतभेदों के परत में सुप्त होता जा रहा है। मानव समाज की दशा को देखकर सहज ही करुणा विह्वल हो कवि हृदय कह उठता है.

एक है सबका माली फूल है सब इक बाग के,
धर्म के नाम पर मत इन्हें लुटो वृथा भरम में डाल के

वास्तव में आत्मा ही सब तत्वों में प्रधान और नियन्ता तत्व है, संचालन, नियमन संरक्षण, संवर्द्धन में आत्मा ही मुख्य रूप से कार्य कारी होती है, जब तक आत्मिक ज्ञान से जीवन का शोधन नहीं होगा वाह्म विज्ञान शाश्वत् शांति देने वाली नहीं है। अन्तर्यामी की स्थिति अध्यात्म साधना से ही संभावित है। प्रेय मार्ग को छोड़कर श्रेय मार्ग नियोजित करने पर ही आत्मा का परिपूर्ण विकास होता है। विभाव की परिणितियों के विलगीकरण का पुरुषार्थ गतिशील हो तो आत्मा अपने स्वत्व को प्रकट कर सकती है। नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव में से अगर भाव का अभाव हो तो बाकी तीन काम नहीं आ सकते। आध्यात्मिक नाम हो, आकृति हो और आध्यात्मिक जीवन भी हो, भावना भी हो तभी अध्यात्म दृष्टि से आध्यात्मक कहलाता है। अगर अपनी आत्मशक्ति की पहचान नहीं हो तो वीतराग के सान्निध्य में भी उसकी चैतन्यता का अनुभव नहीं होता कोरे रह जाना पड़ता है——देवता चाहते तो कुछ विशिष्ट पुद्गलों को डालकर वीतरागी के शरीर की आकृति को वैसा ही रख लेते क्योंकि देवता वैज्ञानिकों से अधिक कलाकार है, पर ऐसा हुआ नहीं विधि का विधान सर्वत्र एक है जो आया है कुछ समय बाद वह नष्ट होगा

ही इसलिये बिना भाव के, नामादि का कोई महत्व नहीं रहता। निराकार को जानना समझना अनुभूत करना श्रेयस्कर है तभी साकार की महत्ता ज्ञात होने लगती है। आज भौतिकता की चकाचौंध आंखों की सही दृष्टि को धुंधलाने लगी है–चर्म चक्षु को कुछ देर आराम देकर अन्तःचक्षु से आत्म जागृति करनी पड़ेगी। मनुष्य शास्त्र श्रवण तो कर लेता है परन्तु मन में छाये अज्ञान रूपी अन्धकार को निरस्त करने के लिये अन्तःकरण के शाश्वत प्रकाश को पहचान कर और जगाने की जरूरत है। कोई अगर कहे भौतिक ही सब कुछ है आध्यात्मिक कुछ नहीं तो सिद्धत्व प्राप्त नहीं हो सकता क्यों कि सिद्ध भगवान भी भौतिक तत्व धर्मास्तिकाय-अधर्मास्तिकाय के आधार से स्थित हैं। कर्म भी भौतिक तत्व है परन्तु तटस्थ ज्ञाता-दृष्टा बनकर विराट स्वरूप को पाना होगा, सबको क्षमा देने की अपनी स्वयं की क्षमता को सदा बरकरार रखना होगा। माफी मांगना सरल है, पर जिससे माफी मांगी जाती है यह उसकी इच्छा की स्वतंत्रता है कि वो माफ करे या ना करे, पर स्व की पहचान के लिये स्व-स्वरूप को शुद्धतर, सूक्ष्मतर बनाने के लिये स्वयं के अधिकार-स्वतंत्रता का सफल प्रयास जारी रखना होगा। **खामेमि सब्वे जीवा, सब्वे जीवा खमंतु में** तभी सार्थक होगा। ऐसी कोई इच्छा भी नहीं करना है जिससे किसी दूसरे को कष्ट हो, दर्द हो, कर्म तो शुद्ध करना ही पड़ेगा तभी सही अहिंसा प्रस्थापित हो सकेगी, इसके लिये सन्यास लेने की जरूरत नहीं, सन्यास मन का भाव है जो गृहस्थ में भी सध सकता है सिर्फ आसक्ति रहित जीवन जीने की कला में पारंगत बनना है।

निश्चय और व्यवहार अलग-अलग है, पर अपने लक्ष्य को ध्येय बनाकर ही सांसारिक औपचारिकता का वहन करते हुए मुक्त होने के लिये आत्म-शोधन जरूरी है बड़े से बड़े बाहरी बंधन तोड़े जा सकते है, परन्तु मोह का बंधन तोड़ना दुष्कर कार्य है, संघर्ष और विग्रह को छोड़कर ही अपने को जाना जा सकता है। **"जे अज्झत्थं जाणंइ ते बहिया जाणइ"** जो अपने को जानता है वही बाहर को जानता है, अपने अंतर की सम्पदा पर दृष्टि डालनी है जो जन्म से साथ होती है, किसी से लिया नहीं जाता। आत्मवान उसी दिन बनेगा जब दीया बिन बाती बिन तेल जलेगा, मन के पार जो है, वह सदा ताजा है, वहां सब नया है, निर्दोष

है, स्वच्छ है। आध्यात्मिकता और भौतिकता के सही ज्ञान के अभाव में यथायोग्य हेय-उपादेय की स्थिति को भी नहीं जाना सकता, अनुकरण से कोई सत्य को उपलब्ध नहीं होता, जिसनें भोगा ही नहीं वह त्याग कैसे क्या करेगा? वह योगी ही क्या जो थोड़ी सी बात के पीछे (प्रतिकूल) प्रतिक्रिया करने लगे। मनोनुकूल या अनुकूल परिस्थिति में तो कोई भी स्थिर रह सकता है, दुःख और सुख यह तो स्वयं की मनोदशा का प्रतिफल है। धार्मिक का अर्थ है—जो भी हो उसमें वो संतुष्ट है। चाह हमारे देखने का द्वार है। चाह से देखा गया सत्य संसार है और अचाह से देखा गया संसार सत्य है, सब वही देखते सुनते है जो वे स्वयं चाहते हैं क्योंकि स्वतंत्रता में स्वयं के अतिरिक्त कोई बाधा नहीं है, अनुभव से गुजर कर जो सरलता आये वही वास्तविक है—विचार, विचार से बाहर नहीं ले जा सकता अहंकार, अहंकार से बाहर नहीं ले जा सकता। *जो व्यक्ति अपने भीतर अशांति की खोज पर निकल जायेगा* वह शान्त चित्त हो जायेगा, धर्म धैर्य है, प्रतीक्षा है, जो जुड़ कर जाना जाता है, विज्ञान श्रम है तोड़कर जानता है। आत्म-बोध कोई आत्मा को पैदा करना नहीं सिर्फ अपनी शक्ति की पहचान कर भूली आत्मा की पुनः स्मृति है सुरति है, ध्यान सिर्फ भरोसा करने के लिये है ताकि विस्मृति मिट जाये स्मृति आ जाए **"संपेहये अर्थ गमप्पणं"**

समाज एक संतुलन है, जीवन एक संतुलन है नहीं तो जीवन खो जायेगा। मनुष्य की स्वतंत्रता ही परम तत्व है और स्व-तंत्र को जानना ही सही पुरुषार्थ है, स्वाध्याय है। एकता की खोज धर्म है, साधना है मन को थामने के लिये निर्विचार रहने के लिये जागरुकता जरुरी है, साध्य को पाने के लिये नहीं साध्य तो मिला हुआ है। धर्म को सम्प्रदाय से आवृत्त नहीं माना जा सकता परन्तु सम्प्रदाय धर्म की उपलब्धि में सहायक हो सकता है। पर आज की दशा कुछ चिंतनीय है, अंधानुकरण से आत्म-विकास के वजाय आत्म-संकोच होता है, भयाक्रान्त सत्य तक नहीं पहुँच सकता, उदार मन वाले विभिन्न धर्म में सत्य देखते हैं पर संकीर्ण मन वाले सिर्फ अन्तर ही देखते हैं, अपने-अपने पंथ निकाल कर प्रभु-पंथ से भटकाव भी हो सकता है। सत्य को कहा नहीं जा सकता, प्रेम को बताया नहीं जा सकता जीया जा सकता है इसलिये अपनी

जीवन शैली ही अपने आचरण का आइना है, जिस क्षण सब छूट जाता है सारा आकाश अपना हो जाता है, श्रद्धा तभी पैदा होती है जब अपनी जानकारी का भ्रम टूटता है **तृष्णा जड़ से खोदकर अनासक्त बन जाय दु:ख बंधन से छूटने का यही एक उपाय है।** अभ्यास की निरंतरता सफलता की कुंजी है, जितना आराम एक गहरी नींद में प्राप्त होता है, उससे कहीं ज्यादा आराम समता भरी जाग्रत अवस्था में प्राप्त होता है, शरीर में जो परमाणु उत्पन्न हो रहे हैं वे चाहे भोजन के कारण हो ब्राह्म वातावरण के कारण हो या पुराने संस्कारों के कारण, यदि उन्हें दृष्टा-भाव से , साक्षी भाव से देखने लगेंगें तो नये संस्कार नहीं बनायेगे, पुराने दूर होने लगेंगे बस गांठे खुलने लगेंगी, समता में स्थिर रहने से प्रतिक्रिया नहीं होगी बल्कि रचनात्मक विधियात्मक कल्याण-कारिणी क्रिया होगी अविद्या से ही संस्कार बनते हैं, अविद्या का अर्थ है अज्ञान, बेहोशी, विमूढ़ता, यही दुःख का मूल कारण है। **"जानो तब मानो"** जानकर मानना स्वयं को सुधारना है, बिना अनुभव के मानना अपने आपको उलझाना है, परमात्मा का अनुभव है अकेली चेतना की अवस्था जहाँ कोई सम्बन्ध नहीं इस **असंग** अवस्था को **केवली** कहते हैं, स्व ही वास्तविक शास्त्र है और स्व ही वास्तविक गुरु, उसमें प्रवेश से ही सत्य उपलब्ध होता है, स्व शरण के अतिरिक्त और कोई सम्यक् गति नहीं है। जो स्वयं पर विश्वासी नहीं है उसके शेष सब विश्वास व्यर्थ हैं। सत्य शास्त्र निर्भर नहीं है बल्कि शास्त्र सत्य निर्भर है, धर्म आत्म ज्ञान है यह सामाजिक नहीं नितान्त वैयक्तिक है, अपने स्वभाव, अपने स्वरूप का उद्घाटन आविष्कार ही धर्म है, मिथ्या नैतिक आचरण से निर्मित समाज का नाम सभ्यता, है, वास्तविक जीवन को उपलब्ध व्यक्तियों के समाज का नाम संस्कृति है, धर्म केन्द्र है सिर्फ नीति के आने से धर्म नहीं आता पर धर्म की स्थिरता (स्वभाव) आने से नीति अवश्य आ जाती है। अनुभूति को शब्द देते ही विचार का जन्म हो जाता है, चित्त चंचल है कोई भी विचार दीर्घ जीवी नहीं है, दृष्टि दृश्य से बंधी हो तो विचार है, दृष्टि से मुक्त हो दृष्टा पर आ जाये तो ध्यान है।

सिद्धान्त मनुष्य के लिये है पर मनुष्य सिद्धान्त के लिये नहीं, सिद्धान्त प्रियता का यह अर्थ नहीं कि आत्मीयजनों से विरोध कर लिया जाय, सब जीव अपनी भूल से ही दु:खी है और स्वयं अपनी भूल सुधार

कर सुखी हो सकते है। योगीश्वर महावीर के सर्वोदय तीर्थ के वास्तु स्वातंत्र्य और समानता ये दो प्रबल दीप-स्तम्भ हैं। तीर्थंकर मानवता का सर्वोत्कृष्ट आदर्श है, **"तुम खो जाओ तो वो मिलेगा"** तुम मिट जाओ तो वह महामिलन घटित होगा। शरीर की सारी गति ठहर जाये तो आसन है और चित्त की सारी गति ठहर जाये तो ध्यान है, महावीर-दर्शन में यही अनमोल सामायिक है। प्रभु महावीर ने भव्य प्राणियों को सभी बाध्य परिधियों से हटकर आत्मिक जागरण की ओर लक्ष्य रखने पर अधिक बल दिया है– स्वयं गौतम गणधर से कहा तुम **जिन** को तभी देख सकते हो जब तुम स्वयं **जिन** बन जाओगे, जबकि भगवान स्वयं वही उपस्थित हैं, अतः स्पष्ट है प्रभु की दिव्य दृष्टि में शरीर का महत्व नही वरन् ज्ञान में आत्मा का परम स्वरूप रहा हुआ है यह बताना है (निराकार) **"ज्ञान क्रियाम्यां मोक्ष"** ज्ञान क्रिया के आचरण से ही आत्मा परमानन्द को प्राप्त कर सकती है। योग-सत्य से जीवन मन, वचन, और काय की क्रिया को विशुद्ध करता है।

"जोगं सच्चेणं जोगं विसी हेई" इन त्रियोगी की अशुभ प्रवृत्ति से आत्मा का अधः पतन हो सकता है और इन्हीं की शुभ-प्रवृत्ति से आत्मोत्थान संभव है। वीर्यान्तराय कर्म के क्षयोपशम से जिस शक्ति का प्रादुर्भाव होता है वह योग है, जिन क्रियाओं के साथ कषाय की प्रधानता रहती है वे अधिक कर्म-बन्धन करती है लेकिन कषाय रहित योग सम्बन्धी क्रियाओं में कार्षायक परिस्पन्दन का अभाव होने से कर्म बंधन अत्यल्प होता है। शरीर और वचन की क्रिया दृष्टि में आ जाती है, पर मन की क्रिया इतनी सूक्ष्म होती है कि स्थूल दृष्टि में नहीं आती, प्रसन्न ऋषि के उदाहरण से इसे समझा जा सकता है-सुमुख और दुमुख के शब्दों को सुनकर उनका मन क्रिया-प्रतिक्रिया करने लगा और मूल स्मृति से वे विस्मृत हो गये। जाग्रत हो जाने पर **निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि** से अशुभ -विचार की तीव्रता को हटा कर, शुभ की प्रादुर्भूति से, अन्तर्मुहूर्त्त में ही धनघाती कर्मों को क्षय करके केवल ज्ञान, केवल दर्शन प्राप्त किया और तभी आयुष्य की समाप्ति होने पर मुक्ति को प्राप्त हुए, इसी प्रकार अनेकों उदाहरण है। अर्जुनमाली जैसा हत्यारा, बड़े से बड़ा पापी, मुनि, तपस्वी जिसने भी आत्मशक्ति को अनुभूत कर सही

पुरूषार्थ किया उनकी **'नति'** उन्नति बनी और एक भव में ही परम तत्व को प्राप्त कर आत्मा से परमात्मा में विगलित हो गये **"पुरिसा अत्ताणं-मेव अभिनिगिज्झ एवं दुक्खा पमोक्खसि"** आध्यात्मिक बल की ताकत भौतिक ताकत से बहुत प्रबल है प्रचंड विषधर सर्प का प्रभाव भी निष्फल हो जाता है। स्वभाव ही न जानना भटकाव है, नामरूप तो उपासक के भाव हैं जो उपास्य को दिया जाता है, निराकार को जानकर ही साकार का जानना श्रेयस्कर है परिश्रम करने से सफलता मिलेगी ही, उद्यम सदा ही दरिद्रता का नाश करता है इसलिये मत दोष लगाओ धर्म को, स्वयं को जांचो स्वयं को परखो, खोलो अपने कर्म को, मन से भुला दे मान अपमान, गत जीवन का मत कर ध्यान, अन्तर तेरा गुण रत्नों की खान कर ले तू अपनी पहचान–**'बस जब जागो तब सबेरा'** को चरितार्थ करने की आवश्यकता है–कवि हृदय सहज ही कह उठता है तुझ में तेरी जो सम्पद छुपी उस पर कभी ना दृष्टि पड़ी, सबकुछ स्वयं से पायेगा तू अर्न्तमुखी हो यदि दो घड़ी—अपनी खोज में जो निकले वो अपनी मंजिल पाये,—जागृति को कभी कोई भय नही रहता दृष्टि बदली कि सृष्टि बदली। ज्ञानी पुरुषों ने जिनका आचरण किया और जो व्यवहार धर्म से उत्पन्न हैं वह कभी निन्दनीय कार्य नहीं होगा। धर्म से मानवीय परिष्कार होता है, सदाचरण कर्त्तव्य, न्याय, सरलता, अबोधिता, सदगुण नैतिकता सत्कर्म आदि धर्म है। स्थितप्रज्ञ महावीर की दृष्टि में धर्म का उद्देश्य है सुकर्म करना जिसमें समस्त प्राणीजगत का असीम हित समाहित हो, जन्म से नहीं वरन् जिन-वाणी के आधार पर जो आचरण करे वही जैन है, जात-पात, ऊँच-नीच यह बाह्य आवरण हैं। सांसारिक क्षेत्र के लिये भी धर्म का सम्बल आवश्यक है चाहे वह कोई भी क्षेत्र क्यों न हो, नीति निर्धारण में भी धर्म की उपयोगिता वरदान स्वरूप है, **"अति सर्वत्र वर्जयेत"** इस उक्ति के मर्म को समझना है, सामाजिक व्यवस्था के लिये सम्प्रदाय एक साधन है वह व्यक्ति को प्रेरित कर सकता है किन्तु स्वयं धर्म नहीं है..........

श्री महावीर जैसे अनेकों केवलियों ने अनेको बार जीवन के स्थायी तत्व को उजागर किया और शांति का मार्ग बताया अपने अनमोल उपदेश के अन्दर ऐसा नवनीत दिया जो दुनिया के अन्य व्यक्ति (छद्मस्त)

नहीं दे सके चाहे वे वैज्ञानिक हो साहित्यवेत्ता हों, बड़े व्यापारी या राजनैतिक तंत्र के नेता हो। असीम को सीमावान व्यक्ति कैसे बांध सकता है जिस दिन किसी भी मानव को यह स्पष्ट हो जाता है - "मैं जिम्मेवार हूँ"। अपने जीवन का उसी क्षण धर्म का जन्म होता है, धर्म के रहस्य को वही जानता है जो मन वाणी और कर्म से अपना संतुलन बनाकर सभी की भलाई का ख्याल रखे——चार प्रकार के मनुष्य होते हैं——जो स्वयं दुःखी हो और दूसरों को भी दुःखी करे, जो स्वयं दुःखी हो पर दूसरों को सुखी करे, जो स्वयं सुखी हो पर दूसरे को दुःखी करे और जो स्वयं भी सुखी हो और दूसरों को भी सुखी करे। सृष्टि की उच्चतम निर्मिति अगर परम चैतन्य रूपी महासागर में अपने को समर्पित कर सके तो महासागर की सारी शक्ति उसे मिल सकती है। अर्थ का व्यापक अर्थ संसार में रहने वाले सभी व्यक्ति सहज रूप में जानते हैं, सब के भिन्न-भिन्न विषय होते हुए भी औसतन सब कुछ एक ही अर्थ में समाविष्ट है, भटका हुआ मानव सही मार्ग पर आ सकता है, पर जो चलेगा ही नहीं वो मंजिल कैसे पा सकता है? बन्धन-मुक्ति याने बन्धन को समझकर उसे खोलना– **स्वतंत्रता** ही परम तत्व है और **स्व-तंत्र** को जानना ही सही **पुरुषार्थ**–जैसे जैसे अन्तर्जगत की समता सधती जायेगी काय, वाणी और चित्त के कर्म आपोआप सुधरने लग जायेगें और सच्ची मानवता का आलोक पूरे विश्व में फैलेगा......................प्रार्थना फलीभूत होगी.........

ॐ शांति ! शांति !! शांति !!!

मलयासुन्दरी चरित्र

दुःखी वीरधवल और व्यन्तरों का वार्त्तालाप

महाबलकुमार मलया सुन्दरी से बोला–प्रिये! अभी तक हमारा पुण्य जागृत है। यह बड़ हमारे पृथ्वीस्थान नगर के समीप ही आ पहुँचा है। अब हमें शीघ्र ही इस बड़ के आश्रय का त्याग कर देना चाहिये। यदि देवाज्ञा से यह वृक्ष फिर वापिस कहीं आगे उड़ कर चला गया तो फिर न जाने हम किस विषमस्थान में जा पड़ेंगे। यो कह कर तुरन्त ही महाबल और मलया सुन्दरी उस बड़ की खोकल से बाहर निकल आये और नजदीक में रहे हुये एक केले के बगीचे में जाकर दोनों ने विश्राम लिया।

कुछ देर बाद उस वटवृक्ष को फिर आकाश में उड़ता देख महाबल बोला–सुन्दरी! देखो वह वृक्ष फिर अपने स्थान पर जा रहा है। बहुत अच्छा हुआ हम लोग उसकी खोकल से निकलकर यहा आ गये। अभी रात बहुत बाकी थी इसलिये निर्भयता से वे दम्पती केले के बगीचे में बैठकर समय बिता रहे थे। इतने में ही करुण स्वर से रूदन करती हुई किसी एक स्त्री का शब्द सुनकर महाबल बोला–प्रिये! यह किसी दुःखित स्त्री के विलाप का शब्द सुनाई देता है, समर्थ पुरुषों का यह कर्तव्य है कि वे दुखी जनों की सहायता करें। तुम यहां ही रहो; और धीरज रक्खो। मैं इस दुःखिनी को सहायता दें करके अभी वापिस आता हूँ। अब यहां पर किसी प्रकार का डर रखने की आवश्यकता नहीं। मलयासुन्दरी इस बात का कुछ उत्तर न दे सकी, इसलिये उसे वहां पर ही छोड़ दयापूर्ण हृदय वाला महाबल–पर दुःख दूर करने के लिये उस रूदन शब्द के अनुसार ही उस दिशा में चल पड़ा।

पति वियोग में मलया पर आफत— अन्धेरी रात! तेरे कर्तव्य भी तेरे ही समान काले होते है। तूने चन्द्रावती में राजा वीरधवल को पुत्री तथा जमाई का वियोग कर संकट में डाला और अब मलयासुन्दरी को भी तुरन्त ही पतिवियोग कराकर दुःख के खड्डे में डाल दिया! हे निष्ठुर विधि! तेरी भी अजब गति है! मनुष्य क्या विचारता है और तू उसके विपरीत क्या से क्या कर डालता है?

इस समय मानवसंचार रहित अन्धेरी रात में केलों के बगीचे में मलयासुन्दरी पुरुष के रूप में अकेली बैठी है। बारंबार हठ करके पति की इच्छा के विरूद्ध उनके साथ जाना योग्य नहीं यह समझकर ही मलया सुन्दरी ने इस समय महाबल के साथ जाने का आग्रह नहीं किया। वह थोड़े समय का वियोग दुःख सहकर भी एक दुःखिनी स्त्री के दुःख को पति के द्वारा दूर हुआ देखने के लिये उत्सुक थी। इसी कारण उसने मौन द्वारा अपने पति को दुखिया का दुख दूर करने की सम्मति दी थी। मेरे स्वामी अभी आयेंगे। वे इस दिशा में गये हैं; इस प्रकार सोच विचार करती हुई महाबल के आगमन की आशा में टकटकी लगाकर वह उसी तरफ देखती रही। पिछली रात बीत गई, प्रातःकाल होने पर सूर्यदेव भी उदयाचल पर आगया; परन्तु आशा तरंगों में डुबकी खानेवाली मलयासुन्दरी का हृदयेश्वर महाबल न आया।

ऐसे अपरिचित जंगल में मुझे अकेली छोड़ न जाने वे कहाँ गये होगे? जो अभी तक भी नहीं आये। माता-पिता को मिलने की उत्कंठा से क्या वे शहर में तो नहीं चले गये होंगे? इत्यादि संकल्प विकल्प करती हुई, मलयासुन्दरी ने शहर में जाने का निश्चय किया। जब वह शहर के दरवाजे के पास पहुंची तब उसे सन्मुख आता हुआ शहर कोतवाल मिला। दिव्यवेष और सुन्दर रूप देखकर कोतवाल ने उसका नाम स्थान पूछा। परन्तु पुरुषवेष में मलया सुन्दरी उसके प्रश्न का उत्तर न देकर सोच विचार में पड़ गयी और घबराये हुए मनुष्य के समान वह चारों तरफ देखने लगी। इससे कोतवाल को और अधिक बहम पैदा हुआ। उसके पास क्या क्या वस्तुयें हैं? यह तलाश करने पर उसके कानों में पहने हुए कुण्डल और शरीर पर धारण किये हुए वस्त्र महाबल कुमार के मालूम हुए। यह देख कोतवाल आश्चर्य में पड़कर विचारने लगा— महाबल कुमार के वस्त्र और इस युवक के पास? कोतवाल उसको पकड़कर राजा के पास ले आया। उसका रूप और वेष देखकर राजा आदि सब आश्चर्य में पड़ गये।

राजा - कोतवाल! यह पुरुष कौन है? इसने पहनी हुई पोशाक महाबल कुमार की मालूम होती है ना?

कोतवाल - महाराज ! यह युवक शहर के दरवाजे में प्रवेश करते हुए मेरे देखने में आया है । इसका नाम स्थान पूछने पर यह कुछ भी उत्तर नहीं देता।

राजा–(मलयासुन्दरी के सन्मुख देख) क्यों भाई तू कौन है? किसका पुत्र है? यह सुन मलयासुन्दरी विचार में पड़ी। यदि इस समय मैं अपनी सत्य बात कहूँगी तो राजा आदि किसी भी मनुष्य को उस पर विश्वास न आयेगा, क्यों कि हम दोनों के मिलाप और विवाह की घटना ही ऐसी है जो सुनने वाले को असंभवित मालूम हो; तथा इस समय मेरा स्वरूप भी पुरुष का है। इसलिये जबतक मुझे अपने स्वामी का मिलाप न हो तबतक सत्य घटना प्रकाशित न करनी चाहिये जो कुछ मेरे नसीब में होगा सो होगा। यह सोच कर उसने कल्पित उत्तर दिया मैं महाबल कुमार का प्रिय मित्र हूँ, उन्हीं ने मुझे यह तमाम् वेष दिया है।

सूरपाल – महाबल कुमार इस समय कहां है?

मलया – कहीं नजदीक में ही स्वेच्छा पूर्वक फिरते होंगे।

सूरपाल – कुमार नजदीक में ही हो तो वह अपने कथन किये वचनानुसार हमें क्यों न आ मिले? कुमार कहीं नजदीक में नहीं हो सकता। अगर यहां नजदीक में ही होता तो चारों तरफ तलाश करने पर भी उसका पता क्यों न लगता? खैर, यदि तू मेरे पुत्र का प्रिय मित्र है, तो इन तमाम मनुष्यों में से कोई भी मनुष्य तुझे क्यों नहीं पहचानता? यह सुन मलयासुन्दरी ने कुछ भी उत्तर न दिया, और वह चुपचाप खड़ी रही।

राजा सूरपाल मन ही मन विचारने लगे –यह संभव होता है, कि कुछ दिन पहले कुमार के वस्त्रादि चुराए गये थे। वह सब अलंब-पर्वत की गुफा में रहने वाले प्रचंड चोर लोहखुरा ने ही चुराया होगा, जिसे कल ही मरवा दिया गया है। यह युवक उसी का छोटा भाई या स्नेही अथवा उसके सगे सम्बधियों में से मालूम होता है, और उसके वियोग से उदासीन या संभ्रान्त हो उसे देखने के लिये जहाँ तहां फिरता हुआ मालूम होता है। कुमार के कुंडल और वस्त्र भी इसे उस चोर के पास से ही मिले होगे, तथा अल्पभाषी और विशेष चुप्पी यह चोर का लक्षण भी इसमें पाया जाता है। यह भी संभव है कि इन चोरों ने मिलकर कहीं पर कुमार को मारडाला हो? इस कारण यह मनुष्य भी मेरा दुश्मन ही है।

इन विचारों की उलझन में भयभ्रान्त हो राजा सूरपाल बोल उठा –अरे! कोतवाल! इस चोर को भी वहीं पर ले जाओ जहाँ पर कल उस चोर को बाँध कर मारा था वहां पर इसे भी मार डालो। राजा के शब्द सुन कर मलया सुन्दरी का हृदय भी काँप गया। उसने सोचा दुर्दैव वश अब फिर मुझ पर मरणान्त विपत्ति का बादल आ घिरा। इस संकट का निस्तार कैसे होगा? धैर्य पाने के लिये ऐसे समय उसने महाबल द्वारा याद कराये उस श्लोक को स्मरण किया। उसको याद करने से उसके हृदय में धैर्य ने प्रवेश किया। वह खुद ही अपने आपको आश्वासन देने लगी। अपने शुभाशुभ कर्म पर निर्भर होकर उसने अपने हृदय में हिम्मत धारण की।

उसकी शाँत और तेजस्वी आकृति को देख मंत्री-मंडल पर उसका बड़ा प्रभाव पड़ा। अकस्मात् राजा की अविचारित प्रचंड आज्ञा से मंत्री-मंडल में खलबली मच गई। अतः प्रधान मंत्री बोला–महाराज! इस युवक की ऐसी भद्र और सुन्दर आकृति से यह अनुमान नहीं हो सकता कि यह चोर होगा? इस दिव्य -पुरुष ने अपराध किया है यह निर्णय जब तक न हो जाय तब तक इसे प्राण-दण्ड की आज्ञा देना सर्वथा अनुचित है तथापि इस विषय में आपकी भ्रान्ति दूर हो सकती हो तो आप इसकी कोई दिव्य परीक्षा ले सकते हैं। यदि उस कठिन परीक्षा से इसका पराभव हुआ तो इसे चोर समझा जाएगा, अगर उस परीक्षा में इसका पराभव न हुआ तो इसे निर्दोष माना जायेगा। इस प्रकार करने से जनता में भी आपका अपवाद न होगा।

राजा–तुम्हारा कहना यथार्थ है। परन्तु इसकी परीक्षा किस तरह ली जाय? मंत्री बोला–महाराज ! एक घड़े में सर्प डाल कर उसे इसके हाथ से निकलवाया जाय। यदि वह सर्प इसे डंस ले तो यह सदोष, और यदि वह इसे न डंसे तो सर्वथा निर्दोष समझना चाहिये। बस इससे बढ़ कर कठिन -परीक्षा और क्या हो सकती है? यह बात मंजूर कर राजा ने गारुड़िक लोगों को बुलवाया और अलंब नामक पहाड़ की किसी गुफा में से एक भयंकर सर्प पकड़ लाने की आज्ञा दी।

राजा ने पुरुषरूपा मलया सुन्दरी के पास से कुमार के वस्त्र और कुंडलादि उतरवा लिये और उसे कोतवाल की निगरानी में सौंप दिया। ठीक इसी समय राज-महल से रानी पद्मावती की दासी सभा में आकर उदास हो नम्रता पूर्वक राजा से बोली–महाराज! महारानी पद्मावती आपसे यह प्रार्थना करती हैं, कि अभी तक भी कुमार की कहीं पर खोज नहीं लगी। उनके कथानुसार आज पांचवां दिन है, यदि कुमार जीवित होते तो अवश्य ही अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार वे आज आये बिना न रहते। लक्ष्मीपुंज हार का भी अभी तक कोई समाचार नहीं मिला। जहाँ कुमार के अस्तित्व का ही अभाव मालुम होता हो वहाँ हार प्राप्ति की आशा रखना सर्वथा व्यर्थ है। अपने इकलौते पुत्र के अभाव में मैं प्राण धारण करने के लिये सर्वथा असमर्थ हूं। मैंने आज तक आपका जो कुछ दुर्विनय या अपराध किया हो उसे आप कृपा कर क्षमा करें एवं मुझे आज्ञा दें तो अलंब नामक पर्वत के शिखर से झंपापात कर प्राण त्याग द्वारा मैं अपनी आत्मा को शान्ति दूं।

राजा बोला–दासी! रानी को हिम्मत दो, और मेरी तरफ से कहो कि यह असह्य दुःख हम दोनों को समान ही है। कुमार की खोज में मैने चारों तरफ मनुष्य भेजे है। उनके लौटने तक धीरज रक्खो। कुमार का कुछ भी समाचार अवश्य मिलेगा, क्योंकि आज पांचवाँ दिन है अगर रात तक कुमार का कुछ भी समाचार न मिला तो कल जैसा योग्य होगा, वैसा किया जायगा। दासी! आज इस सुन्दर आकृति वाले पुरुष के पास से कुमार के कुंडल और कुछ वस्त्र मिले है, संभव है कि इसी प्रकार हार और कुमार मिल जाएँ। आज इस मनुष्य की परीक्षा करनी है। यह तमाम समाचार कह रानी को कुमार के ये कुंडल और वस्त्र देना, यों कह कर राजा ने कुंडल और वस्त्र दासी को दे दिये। दासी ने रणवास में जाकर वह कुंडल और वस्त्र महारानी पद्मावती को दे दिये। उन्हें देख रानी को अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ।

रानी–दासी! ये कुंडलआदि कहां से मिले? और मेरे समाचार का राजा ने क्या उत्तर दिया? दासी ने राजा का कथन किया हुआ तमाम वृतांत कह सुनाया। अब हर्ष और शोक से व्याकुल हो रानी पद्मावती अनेक प्रकार के संकल्प करने लगी। क्या सचमुच ही वह मेरे पुत्र का

प्रिय-मित्र होगा? वह अकेला ही यहाँ क्यों आया होगा? क्या वह कुमार का समाचार लाया है? या कोई धूर्त-मनुष्य मेरे पुत्र को मार कर तो उसके कुंडल वस्त्रादि नहीं लाया? मैं उस पुरुष को देखूं तो सही।

यह विचार कर रानी ने दासी से कहा–दासी! जिस जगह उस पुरुष की दिव्य-द्वारा परीक्षा की जायगी मुझे भी वहां पर जाना है। उसे देखकर मैं भी इस विषय में कुछ विशेष निर्णय कर सकूंगी। इस लिये वहां चलने की सर्व सामग्री तैयार कर। रानी के आने के पहले ही धनंजय-यक्ष के मन्दिर में राजा आदि हजारों मनुष्य उस कठिन-परीक्षा को देखने के लिये आ पहुँचे थे। इस समय सर्प लाने को भेजे हुए गारुड़िक भी वहां आ गये। वे राजा को नमस्कार कर बोले–महाराज! अलंबगिरि की अनेक गुफायें ढूंढ़ते हुए हमें श्यामवर्ण और दीर्घकाय वाला एक भयंकर सर्प मिला है। उसे हम घड़े में डाल कर यहां लाये हैं। यों कहकर उन्होंने वह घड़ा राजा के सामने रख दिया।

राजा ने उस घड़े को धनंजय-यक्ष के मन्दिर में उसकी मूर्ति के सामने रखवा दिया, और कोतवाल को आज्ञा दी कि जाओ उस पुरुष को यहां ले आओ। राजा की आज्ञा पाते ही वस्त्रधारी अनेक राजपुरुषों से परिवेष्टित उस पुरुष रूपी मलयासुन्दरी को वहां पर लाया गया। उसके तेजस्वी और भद्राकृति वाले चेहरे को देखकर प्रधान नागरिक आपस में कहने लगे क्या ऐसी आकृति वाला पुरुष कभी चोर हो सकता है? यदि जल से अग्नि उत्पन्न हो, चन्द्र से अंगार बरसे, और अमृत से विष प्रगट हो तो ऐसे पुरुष से अकार्य हो सकता है। यह सोच विचार कर प्रधान-नागरिक राजा से बोले-महाराज ! इसकी सुन्दर और सौम्य मुखमुद्रा से यह मनुष्य कुलीन और किसी बड़े खानदान का मालूम होता है। अतः ऐसे मनुष्य को इस तरह का भयंकर दिव्य देना योग्य नहीं है। उसकी सौम्यआकृति देख रानी ने भी ऐसी घोर परीक्षा लेने से राजा को निषेध किया।

राजा–सज्जनो! कठिन दिव्य देने में किसी तरह का दोष नहीं है, जिस तरह सच्चा सुवर्ण अग्नि में डालने पर विशेष तेजवान होकर शुद्ध होता है वैसे ही यदि यह पुरुष निर्दोष होगा तो इसकी कीर्ति में विशेष वृद्धि होगी। राजा के मुख से यह उत्तर सुनकर रानी व नागरिक लोग चुप रह गये।

राजा की आज्ञा से प्रधान मंत्री ने उस पुरुष को कहा महाशय आप कौन हैं, हमें इस बात का कुछ पता नहीं। आप पर चोरी का अपराध रक्खा गया है। इसके साथ ही महाबल कुमार के शरीर को नुकसान पहुँचाने का भी शक किया जाता है। इस विषय में तुम निर्दोष हो या सदोष हो यह निर्णय करने के लिये यहां पर तुम्हें कठिन परीक्षा देनी होगी। इस यक्ष के मन्दिर में सर्प डालकर एक घड़ा रक्खा गया है वह घड़ा खोलकर तुम्हें अपने हाथ से पकड़कर उस घड़े में से सर्प को बाहर निकालना होगा। फिर अपने हाथ से ही उस सांप को घड़े में रख देना होगा; यदि इसके दरम्यान उस सांप ने तुम्हें न डंसा तो तमाम जनता तुम्हें निर्दोष मानेगी। यदि तुम सदोष हुए तो अवश्य ही वह सर्प तुम्हें डंक मारेगा, और इसीसे तुम्हारे दोष का तुम्हें दंड भी मिल जायगा। महाराज सूरपाल की आज्ञा से तुम्हारी निर्दोषिता प्रगट करने के लिये यह कठिन परीक्षा ली जाती है।

प्रधान का कथन पूर्ण होते ही पुरुष वेषधारक मलयासुन्दरी धैर्य धारण कर शीघ्र ही उस घट के पास खड़ी हुई। पंच परमेष्ठी मंत्र को स्मरण कर, महाबल द्वारा बतलाये हुये उस श्लोक का भावार्थ यादकर उसने प्रसन्नता पूर्वक उत्साह से उस घड़े को उघाड़ा और आश्चर्य पूर्वक जनता के देखते हुए उसमें हाथ डालकर, सर्प को बाहर निकाला। मलयासुन्दरी का हाथ लगते ही रस्सी के समान होकर किसी स्नेही के जैसे वह सर्प उसका मुख देखने लगा। बहुत समय तक हाथ में रखने पर भी उस भयंकर सर्प ने मलयासुन्दरी को कुछ भी नुकसान नहीं पहुंचाया।

इससे उसकी सत्यता के लिये उपस्थित जनता खुश होकर उच्चस्वर से निर्दोष, निर्दोष! पुकार कर तालियां बजाने लगी। मलयासुन्दरी के हाथ में पाले हुये सर्प के समान रहे हुए उस भीमकाय सर्प ने अपने मुख से एक दिव्य हार उगला औरं धीरे-धीरे उसके गले में डाल दिया। यह आश्चर्य देख तमाम लोग विचारशून्य हो गये। अहा! यह कैसा आश्चर्य! राजा ने उस हार को पहचान लिया और वह बोल उठा–अहो! यही वह लक्ष्मीपुंज हार है, जिसकी खोज के लिये महाबल कुमार गया है। तमाम मनुष्य एक दूसरे के सामने देखने लगे। इतने ही में उस सांप

ने ऊपर फण उठाकर अपनी जीभ से उस परीक्षा देनेवाले युवक का मस्तक चाटकर उसके मस्तक पर लगे हुए तिलक को मिटा दिया। तिलक के मिटते ही वह नवयोवना स्त्री बन गयी। सर्प उसके मस्तक पर अपनी फणाओं को छत्राकार में विस्तारित कर आनंद से झूमने लगा। इस आश्चर्य को देखकर तमाम लोगों के छक्के छूट गये। किसी के भी मुंह से कुछ शब्द न निकला। वे भयभीत हो स्तब्ध से रह गये।

इस चमत्कार को देख भय से कंपित हो, महाराज सूरपाल बोला--अरे मैंने मूर्खता में आकर कैसा अयोग्य कार्य किया! जनता और रानी के मना करने पर भी मैंने इस दिव्य पुरुष की ऐसी भयंकर परीक्षा लेकर महा अनर्थ पैदा किया? यह सर्प का रूप लेकर आया मालूम होता है। अथवा इस सत्पुरुष की सत्यता के कारण यह शेष नाग ही इसकी सहायता करने के लिये आया हो, या इस मन्दिर का अधिष्ठाता धनंजय-यक्षराज ही प्रगट हुआ हो, यह अनुमान होता है। इस घटना का कुछ परमार्थ समझ में नहीं आता। मुझे इनकी आराधना करनी चाहिये। क्योंकि भक्ति से ही देवता अपने अनुकूल होते है। यह सोचकर राजा ने पुष्प और धूप मंगाकर उस नाग देव की पूजा की और हाथ जोड़कर नम्रता से कहा—हे पन्नगाधिराज! मैंने तुम्हें अनेक प्रकार से कष्ट पहुंचाया है, कृपाकर मेरा अपराध क्षमा करो।

राजा जब यह कह रहा था, तब मलयासुन्दरी ने उस सर्प को नीचे जमीन पर रख दिया। राजा ने दूध मंगाकर उस सर्प के सामने रक्खा। जब सर्प ने दूध पी लिया तब राजा ने उस सर्प को लाने वाले गारुड़ियों से कहा, इस नागराज को जहां से तुम लाये हो; उसी जगह इस तरह छोड़ आओ कि जिससे इसे जरा भी तकलीफ न होने पावे। यदि इस नागदेव को वहां छोड़ने तक जरा भी तकलीफ पहुंची तो मैं तुम्हें प्राणदंड की शिक्षा दूंगा। राजा का आदेश पाते ही गारुड़ी लोग उस सर्प को बड़ी हिफाजत के साथ उठाकर ले गये।

अब राजा मलयासुन्दरी से पूछने लगा — भद्रे! तू पहले पुरुष रूप में थी और इस समय हमारे देखते हुए तेरा स्त्री रूप बन गया, इस बात में क्या रहस्य है? अपना सच्चा वृतान्त सुना कर हमारे सब के मन को शान्त कर। मलयासुन्दरी इस समय यह विचार कर रही थी, कि पहले

भी मेरे मस्तक पर किये हुए तिलक को मेरे स्वामी के थूक से मिटाने पर मेरा स्वाभाविक रूप बन गया था, और उन्होंने मुझे यह कहा भी था, कि जब तक मैं अपने थूक से इस तिलक को न मिटा दूंगा तब तक तेरा स्वाभाविक रूप कदापि न होगा; परन्तु इस वक्त तो इस सर्प के ही तिलक चाटने से मेरा स्वाभाविक रूप बन गया! यह लक्ष्मीपुंज हार भी इस सर्प के मुख में से निकला, तो क्या मेरे स्वामी ने ही सर्प का रूप धारण किया होगा? यह बात समझ में नहीं आती! यदि इस वक्त मैं अपनी सत्य घटना राजा को सुना दूं तो उस में किसी तरह की हानि मालूम नहीं होती। यह सोचकर मलयासुन्दरी बोली – महाराज! मैं चंद्रावती - नरेश महाराज-वीरधवल की मलयासुन्दरी नामकी पुत्री हूं, इसके सिवाय और मैं कुछ नहीं जानती।

भद्रे! तेरा यह वचन विश्वास करने योग्य नहीं है क्योंकि जब तू पुरुष-रूप में थी, तब कुछ और ही कहती थी। फिर कहां चंद्रावती और कहां पृथ्वीस्थानपुर नगर! बासठ योजन का अन्तर और फिर महाराज-वीरधवल की कन्या यहां पर एकाकी किस तरह से आ सकती है? खैर यदि यह बात सच ही होगी तो वहां से कोई तुम्हारी खोज में आयेगा, तो तुम्हारा सत्कार कर उसके साथ तुम्हें वापिस भेज दिया जायेगा। अब रानी के सामने नजर कर राजा ने कहा – प्रिये! लक्ष्मीपुंज हार सहित अभी तो तुम इस कन्या को अपने पास रक्खो। प्रतिज्ञा के अनुसार हार पांच ही दिनों में आगया है। सत्य-प्रतिज्ञावाला कुमार भी किसी स्थान पर सुखी या दुखी अवस्था में अवश्य होगा, और वह अब जल्दी ही आ मिलेगा अतः अब तुम प्राण-त्याग के अभिप्राय को त्याग दो, क्योंकि हार के लिये की हुई प्रतिज्ञा भी तुम्हारी पूर्ण हो चुकी है।

क्रमशः

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta-700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,Resi; 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta-700 020
Ph: 247-6874,Resi: 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta -700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box: 16127, Cal-17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Calcutta - 700 019
Ph: (O) 2208967, (R) 2471750

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (R) 218-6823

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram: Sudera

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H.M.T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Calcutta - 700 007
Phone: 239 7607

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Ph: 238-8677/1647, 239-6097

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Ph: 236-3028, 237-4039

IN THE MEMORY OF LATE
JITENDRA SINGH NAHAR
Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Ph: (O) 244-1309, (R) 475-7458

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Ph: Shop -227-1857 (R) 238-0026

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East
Calcutta - 700 069

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (R) 238-0817

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071
Ph: 282-4649, Resi: 247-2670

MANI DHARITAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P. V. C. Insulated Wires and Cables.
JHANWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110043, Ph:(O) 5016527
(R) 545 3415, 542 3304
Mobile: 9811075330,

ASHOKE KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Calcutta
Ph: 237 4132/236 2072

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178,25778,25779
Fax: 05414-25378 (U. P.) 0151-61256 (Bikaner)

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Ph: 464-1186

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Ph: 284-0612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Ph: 2477450/5264

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007
Ph: Gaddy-233-1766/238-8846
Mobile: 98 3102 8566
Resi: 355-9641/7196

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi: 464-2783

APRAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
Email : Suravee @cal2. vsnl. net in
sona @ cal3. vsnl. net in

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta - 700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

GRAPHIC PRINT & PACK
13A, Dacars Lane (Ground Floor) Calcutta - 69
Ph: 248-1533,248-0046

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Ph: 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Calcutta - 700 026
Ph: 476-1533

MOTILAL BENGANI CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Ph: 220-9255

Dr. ANJULA BINAYIKA
M. D. DND, M. R. C. O. G. (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Ph: 474-8008

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta - 700068
Ph: 4720610

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Ph: 239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1, M. G. Road, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950
(Fact). 557-1697/7059

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Ph: 2353902/2759
Fax: 033-2353902

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph: 248-5146/6941, Mobile: 9830032021
Fax: 91 (33)2420588

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph: 238-7281, 230-1739

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Calcutta - 700 001
Ph: (O) 348 8576/0669/1242
Resi: 225 5514, 237 8208, 229 1783

GYANI RAM HARAK CHAND SARAOGI
CHARITABLE TRUST
P-8 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Ph: 239 6205/9727

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta - 700 001
Ph: 248-4730/6256/9867, Direct: 248-6477/6169
Resi: 478-0765/458-3397, Mobile: 98300-30618
Fax: 248-6169

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Calcutta - 700 001
Ph: 2352076, 2355701

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street
Calcutta - 700 013
Ph: 244-4436

R. K. KOTHARI
N. I. Corporation
Photographic, Heavy & Fine Chemicals
44c, Indian Mirror Street, Calcutta-700 013
Phone: 245-5763/64/65
D: 245-5766, Fax: 91-33-2446148

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

A. K. CHHAJER
Chhajer & Company
Chartered Accountants
230 A Masjid Moth
South Extension Part-II
New Delhi-110049

लाड़ा देवी ग्रन्थमाला
१२ सी, लार्ड सिन्हा रोड़
कलकत्ता - ७०० ०७१

उद्देश्य

अप्रकाशित, प्राचीन, दुर्लभ, ज्ञानवर्धक एवं जनोपयोगी साहित्य प्रकाशन संवर्धन एवं संयोजन

ग्रन्थमाला से प्रकाशित पुस्तकें

श्रवण बेलगोल इतिहास के परिपेक्ष्य में
निर्माल्य ग्रहण पाप है
तीर्थ मान चित्र
भक्तामर स्तोत्र
जैन प्रश्नोत्तर माला
जैन पूजा पाठ चौबीसी पूजा संग्रह
अक्षय विधि व्रत कथा एवं पूजा
(सुहाग दशमी पूजा)
सरल जैन विवाह विधि
भव पार चलोगे
भक्तामर स्तोत्र पूजा सहित
दीपावली पूजन
तमिलनाडू के जैन तीर्थ
दिव्य ज्योति
जैन व्रत विधि एवं कथा
तत्वार्थ सूत्र
मुझे सुखी होना है
(चिन्तन के कुछ क्षण)-
पंच स्त्रोत
समाधि तंत्र

श्री राजकुमार अभिषेक कुमार सेठी
कलकत्ता

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of puming stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in places where Columbus would have feared to tread)

Subhash Projects and Marketing Limited

MAN IN PARTNERSHIP WITHNATURE

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Calcutta 700016 Ph:(033)245 7562. Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi 110 020 Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011)684 6003. Regional Office:8/2 Lisoor Road, Bangalore 560 042, Ph: (080)559 5508-15, Fax: (080) 559 5580.

Laying pipelines across one of the nation s driest regions, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreshwar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of paradip

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

BOTHRA SHIPPING SERVICES

2, CLIVE GHAT STREET,
(N. C. DUTTA SARANI)
2ND FLOOR, ROOM NO. 10,
CALCUTTA - 700 001
Fax No. 220-6400
Phone: 220-7162
Email : sccbss @ cal2. vsnl. net in

**Steamer Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors**

शास्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Calcutta - 700 071

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

Phone: 226-0881, 226-0883, 226-6283, 226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 6346441/6446442
Fax: 6346287

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं।

Shri Radha Krishnan

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.

Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta, 700 017
Telegram: 'Hindogen' Calcutta
Phone: (033) 242-8399/8330/5443

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
Iron Ore and Manganese Ore Mines
In Orissa

S.G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanksrit College, Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayaputi, Phase-1, New Delhi-110064
Phone: 5144496,5131086,5132203
Fax: 91-011-5131184
E-mail: Laxman. jariwala @ gems. vsnl. net. in

"ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।"

KUSUM CHANACHUR
Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan, Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia.

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin-742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No. : 53232
Cal. Phone: No.: 033 2300432, 5213863

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence,
Coal India, CESC, Railways,
Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short
Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv level.

Current Transformer upto 66kv.

Dry type Transformer.

Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, CALCUTTA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

English:

1. Bhagavati-sutra-Taxt edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:
   Vol - 1 (satakas 1-2) Price : Rs. 150.00
   Vol - 2 (satakas 3-6) 150.00
   Vol - 3 (satakas 7-8) 150.00
   Vol -4 (satakas 9-11) 150.00
2. James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Calcutta; 1977. pp. x+82 with 45 plates Price : Rs. 100.00
   (It is the glorification of the sacred mountain Satrunaya.}
3. P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani. Price : Rs. 15.00
4. Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord, Price : Rs. 15.00
5. Lalwani and S.R. Benerjee - Weber's Sacred Literature of the Jains Price : Rs. 100.00

Hindi

6. Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumar Begani Price Rs. 40.00
7. Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti ki Kavita. translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 20.00
8. Ganesh Lalwani - Nilanjana translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 30.00
9. Ganesh Lalwani - Candana-Murti translated by Shrimati Rajkumari Begani. Price: Rs. 50.00
10. Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira Price: Rs. 60.00
11. Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Rat, Price: Rs. 45.00
12. Ganesh Lalwani Pancadasi. Price: Rs. 100.00
13. Rajkumari Begani-Yado ke Aine me. Price: Rs. 30.00

Bengali:

14. Ganesh Lalwani-Atimukta, Price: Rs. 40.00
15. Ganesh Lalwani-Sraman Samskrti Kavita. Price:Rs. 20.00
16. Puran Chand Shyamsukha- Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma. Price.Rs. 15.00
17. Satya Ranjan Bandyopadhyay- Prasnottare Jaina-dharma Price:Rs. 20.00

मानव जीवन नश्वर हैं उसमें भी आयु तो बहुत ही परिमित है

एकमात्र मोंक्ष मार्ग ही अविचल है यह जानकर

काम भोगो से निवृत हो जाना चाहिए।

*

G.C. Jain

A-40 N.D. S.E-11
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/RNP-45
Vol. XXIV No. 9 TITTHAYARA December 2000
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

कोहो पीइं पणासेइ, माणी विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।

क्रोध प्रीति का नाश करता है,
मान विनय का नाश करता है,
माया मित्रता का नाश करती है,
और लोभ सभी सद्‌गुणों का नाश कर देता है।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225